ISSN: 2349-6002

शिक्षा में भाषाई पहचान और सांस्कृतिक विविधता

Kala Rinaben Chandulal

doi.org/10.64643/IJIRTV12I8-191106-459

प्रस्तावना—**भारत की क्षेत्रीय, भाषाई, धार्मिक, जातीय एवं जनजातीय विविधता, देश की सामाजिक और सांस्कृतिक समृद्धि की पहचान है। यह विविधता केवल एक वास्तविकता नहीं, बल्कि एक विरासत भी है, जो भारत को अद्वितीय बनाती है। शिक्षा के क्षेत्र में इस विविधता का प्रभाव व्यापक और गहन है, क्योंकि यह न केवल ज्ञान के प्रसार का माध्यम है, बल्कि समाज को एकजुट रखने, सांस्कृतिक समझ को बढ़ाने और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने का भी महत्वपूर्ण साधन है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में शिक्षा की भूमिका केवल किताबी ज्ञान देने तक सीमित नहीं रह सकती। शिक्षा को ऐसा होना चाहिए, जो हर क्षेत्र, हर भाषा, हर धर्म, हर जाति और हर जनजाति के छात्रों को समान अवसर प्रदान करे और उनके विशिष्ट सांस्कृतिक एवं भाषाई अनुभवों को सम्मान दे। शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता, सहिष्णुता और भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित करना आवश्यक है ताकि विविध पृष्ठभूमियों से आने वाले छात्र एक-दूसरे को समझ सकें और मिल-जुलकर एक समावेशी समाज का निर्माण कर सकें। शिक्षा व्यवस्था को इस दिशा में अपनी नीतियों और कार्यक्रमों को इस प्रकार बनाना चाहिए, जिससे समाज के सभी तबकों–विशेषकर हाशिए पर खड़े जातीय एवं जनजातीय समुदायों–को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हों। इसके लिए शिक्षकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है; उन्हें विभिन्न सामाजिक-भाषाई पृष्ठभूमियों के बच्चों की जरूरतों को समझने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रमों में विविध सांस्कृतिक और भाषाई सामग्री का समावेश, बहुभाषी शिक्षा का समर्थन, और स्थानीय संदर्भों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण प्रक्रिया को सजीव बनाना आवश्यक है। यह भी समझना जरूरी है कि विविधता कोई समस्या नहीं है, बल्कि यह शिक्षा को अधिक समृद्ध, जीवंत और समावेशी बनाने का एक अवसर है। एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था जो विविधता का सम्मान करे, वह न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि एक ऐसी पीढ़ी तैयार करती है, जो दूसरों के प्रति सहिष्णु और संवेदनशील हो, और जो विविधता को एकता में बदलने की क्षमता रखती हो। अतः कहा जा सकता है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए विविधता एक महत्वपूर्ण चुनौती के साथ-साथ एक अनमोल संसाधन भी है। यदि इसे उचित दृष्टिकोण और समावेशी नीतियों के माध्यम से संभाला जाए, तो शिक्षा भारत को एक समतामूलक, न्यायपूर्ण और बहुलतावादी राष्ट्र के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। विविधता की इस शक्ति को पहचानना और उसे सकारात्मक दिशा देना, आज की शिक्षा प्रणाली की अनिवार्य आवश्यकता है।**

कीवर्ड—**समाज, संस्कृति, सामान्य जागरूकता, सांस्कृतिक विविधता, शिक्षा, न्याय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, आत्मविश्वास, आत्मसम्मान**

I. सारांश

सांस्कृतिक पहचान और आत्मविश्वास: छात्रों की सांस्कृतिक और भाषाई पहचान उनके सीखने और विकास की प्रक्रिया को आकार देती है। जब शिक्षा में उनकी अपनी संस्कृति और भाषा को सम्मान मिलता है, तो उनका आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान बढ़ता है। मातृभाषा आधारित शिक्षण: राष्ट्रीय शिक्षा नीति

ISSN: 2349-6002

(NEP 2020) के अनुसार, प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा बच्चों की समझ को गहरा करती है और उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़े रखती है। यह प्रभावी संचार और सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाने में सहायक है। सांस्कृतिक संरक्षण: भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं है, बल्कि संस्कृति, परंपराओं, लोककथाओं और मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का माध्यम है। बहुभाषिकता और वैश्विक अवसर: आज की वैश्वीकृत दुनिया में, बहुभाषी छात्रों को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त होता है। यह छात्रों में सहानुभूति, सहयोग और वैश्विक जागरूकता को बढ़ावा देता है। समावेशिता और समानता: पाठ्यक्रम में विविध संस्कृतियों और भाषाओं को शामिल करने से सभी छात्रों को महत्व का अनुभव होता है, जिससे भेदभाव कम होता है और कक्षा में समावेशिता बढ़ती है। विविधता में एकता: स्कूलों में आयोजित 'भारतीय भाषा उत्सव' जैसे कार्यक्रम छात्रों को यह संदेश देते हैं कि भाषाई विविधता ही भारत की सबसे बड़ी शक्ति है, जो देश को एकता के सूत्र में बांधती है।

शिक्षा में भाषाई और सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार करना न केवल छात्रों के व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि यह एक न्यायपूर्ण और समृद्ध समाज के निर्माण के लिए भी अनिवार्य है।

II. शोध उद्देश्यः

- समाज, संस्कृति, सामान्य जागरूकता
- सांस्कृतिक विविधता
- शिक्षा, न्याय
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति
- आत्मविश्वास, आत्मसम्मान

III. डेटा विश्लेषण

1.समाज, संस्कृति, सामान्य जागरूकता

शिक्षा समाज की रीढ़ होती है। यह न केवल व्यक्तियों को रोजगार के लिए तैयार करती है, बल्कि एक न्यायपूर्ण और प्रगतिशील समाज का निर्माण भी करती है। शिक्षा अंधविश्वास, जातिवाद और लैंगिक भेदभाव जैसी कुरीतियों को खत्म करने का औजार है। शिक्षित नागरिक कौशल और नवाचार (Innovation) के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था में योगदान देते हैं। शिक्षा नागरिकों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत कर एक मजबूत लोकतंत्र की स्थापना करती है।

संस्कृति हमारे जीने का तरीका है, और शिक्षा उसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का सेतु (Bridge) है। शिक्षा के माध्यम से हम अपनी भाषा, कला, नैतिक मूल्यों और परंपराओं को जीवित रखते हैं। शिक्षा हमें अन्य संस्कृतियों का सम्मान करना और विविधता में एकता को समझना सिखाती है। शिक्षा संस्कृति में समय के साथ आए दोषों को सुधारने और उसे आधुनिक युग के अनुरूप बनाने में मदद करती है।

आज के सूचना के युग में, शिक्षा का एक बड़ा हिस्सा 'जागरूकता' है। एक जागरूक व्यक्ति ही सही निर्णय ले सकता है। शिक्षा हमें यह समझने की शक्ति देती है कि कौन सी जानकारी सही है और कौन सी 'फेक न्यूज़' या भ्रामक है। पर्यावरण और स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन, स्वच्छता और व्यक्तिगत स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता शिक्षा के बिना संभव नहीं है। अपने बुनियादी कानूनों और सरकारी योजनाओं के प्रति सजग रहना आधुनिक शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा है।

ISSN: 2349-6002

2.सांस्कृतिक विविधता (Cultural Diversity)

शिक्षा में सांस्कृतिक विविधता (Cultural Diversity) का अर्थ है–कक्षा के भीतर अलग-अलग पृष्ठभूमि, भाषा, धर्म, परंपराओं और सामाजिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों का एक साथ होना। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इसे एक 'चुनौती' के बजाय एक 'संसाधन' के रूप में देखा जाता है। शिक्षा में सांस्कृतिक विविधता के मुख्य पहलुओं को हम निम्नलिखित बिंदुओं से समझ सकते हैं

विविधतापूर्ण कक्षा में शिक्षक किसी एक संस्कृति को श्रेष्ठ बताने के बजाय सभी छात्रों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का सम्मान करते हैं। छात्रों को उनकी मातृभाषा में बात करने या अपनी भाषा के शब्दों को साझा करने का अवसर देना। पढ़ाते समय अलग-अलग संस्कृतियों के उदाहरणों, कहानियों और लोक कथाओं का उपयोग करना। छात्रों में 'सहानुभूति' और 'सहनशीलता' का विकास जब बच्चे बचपन से ही अलग-अलग पृष्ठभूमि के साथियों के साथ पढ़ते हैं, तो उनमें स्वाभाविक रूप से कुछ गुण विकसित होते हैं।

शिक्षा केवल एक क्षेत्र के इतिहास या भूगोल तक सीमित नहीं होनी चाहिए। पाठ्यक्रम में केवल एक ही समुदाय या विचारधारा के नायकों के बजाय, विभिन्न संस्कृतियों के महान व्यक्तित्वों को स्थान देना। स्कूल में केवल मुख्यधारा के त्योहार ही नहीं, बल्कि क्षेत्रीय और जनजातीय कलाओं व उत्सवों को भी पहचान मिलना। सांस्कृतिक विविधता को लागू करने में कुछ बाधाएं भी आती हैं, जिन्हें शिक्षा दूर करती है। अलग भाषा बोलने वाले बच्चों को मुख्यधारा में लाने के लिए 'ब्रिज कोर्स' का उपयोग। कुछ छात्र अपनी संस्कृति को लेकर झिझक महसूस कर सकते हैं; शिक्षा उन्हें अपनी जड़ों पर गर्व करना सिखाती है।

3.शिक्षा न्याय (Educational Justice)

शिक्षा न्याय (Educational Justice) का अर्थ केवल सभी बच्चों को स्कूल भेजना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी सामाजिक, आर्थिक या शारीरिक स्थिति की परवाह किए बिना समान अवसर, संसाधन और सम्मान प्राप्त हो। शिक्षा न्याय का पहला कदम यह है कि शिक्षा के द्वार सभी के लिए समान रूप से खुले हों। दूर-दराज के गाँवों, आदिवासी क्षेत्रों और झुग्गी-झोपड़ियों में गुणवत्तापूर्ण स्कूलों की उपलब्धता। गरीब मेधावी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति और मुफ्त शिक्षा ताकि धन की कमी उनकी प्रगति में बाधा न बने। आज के समय में इंटरनेट और कंप्यूटर तक पहुँच भी शिक्षा न्याय का एक अनिवार्य हिस्सा बन गई है (Digital Divide को कम करना)।

न्याय केवल स्कूल में प्रवेश दिलाने से पूरा नहीं होता, बल्कि स्कूल के भीतर के अनुभव से भी जुड़ा है। दिव्यांग बच्चों के लिए रैंप, ब्रेल लिपि और विशेष शिक्षकों की व्यवस्था करना। लड़कियों की शिक्षा के प्रति सामाजिक बाधाओं को दूर करना और उन्हें सुरक्षित वातावरण प्रदान करना। कक्षा में किसी भी छात्र के साथ उसकी पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव न होना। शिक्षा न्याय का एक बड़ा लक्ष्य समाज में व्याप्त असमानताओं को खत्म करना है। चेतना का विकास छात्रों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना ताकि वे शोषण के खिलाफ आवाज उठा सकें। प्रतिनिधित्व: पाठ्यक्रम (Syllabus) में हाशिए पर रहने वाले समुदायों के इतिहास और योगदान को शामिल करना।

4.राष्ट्रीय शिक्षा नीति

भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारत की शिक्षा प्रणाली में 34 वर्षों के बाद किया गया सबसे

बड़ा सुधार है। इसका मुख्य लक्ष्य भारत को एक "वैश्विक ज्ञान महाशक्ति" (Global Knowledge Superpower) बनाना है।यह नीति मुख्य रूप से 5 स्तंभों पर आधारित है: पहुंच (Access), समता (Equity), गुणवत्ता (Quality), वहनीयता (Affordability) और जवाबदेही (Accountability)।

1. स्कूली शिक्षा में बड़े बदलाव

नया ढांचा (5+3+3+4): पुराने 10+2 ढांचे को बदलकर अब बच्चों की शिक्षा को चार चरणों में बांटा गया है:Foundational (5 वर्ष): आंगनवाड़ी/प्री-स्कूल (3 साल) + कक्षा 1-2 (2 साल)। Preparatory (3 वर्ष): कक्षा 3 से 5 तक। Middle (3 वर्ष): कक्षा 6 से 8 तक (यहाँ से व्यावसायिक शिक्षा/Vocational training शुरू होगी)। Secondary (4 वर्ष): कक्षा 9 से 12 तक (विषयों के चुनाव में लचीलापन)। कक्षा 5 तक (संभव हो तो कक्षा 8 तक) शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा रखने पर जोर दिया गया है। बोर्ड परीक्षाओं को आसान बनाया जाएगा और छात्र के रटने के बजाय उसके वास्तविक कौशल का परीक्षण किया जाएगा।

2. उच्च शिक्षा (Higher Education) में सुधार

बहु-प्रवेश और निकास (Multiple Entry & Exit): अब छात्र पढ़ाई के बीच में ब्रेक ले सकते हैं। 1 साल बाद छोड़ने पर— सर्टिफिकेट, 2 साल बाद— डिप्लोमा, 3-4 साल बाद— डिग्री मिलेगी।

एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (ABC): छात्रों के डिजिटल क्रेडिट सुरक्षित रहेंगे, ताकि वे पढ़ाई बीच में छोड़कर बाद में वहीं से शुरू कर सकें। 2035 तक उच्च शिक्षा में नामांकन को 50% तक ले जाने का लक्ष्य है।

3. शिक्षक और तकनीक

शिक्षकों के लिए न्यूनतम डिग्री 4-वर्षीय एकीकृत बी.एड. (B.Ed.) होगी। ई-लर्निंग और डिजिटल बुनियादी ढांचे के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है ताकि ग्रामीण क्षेत्रों तक शिक्षा पहुँच सके।

5.आत्मविश्वास, आत्मसम्मान

भाषाई शिक्षा (Language Education) में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान का गहरा संबंध है। जब कोई छात्र किसी भाषा को सीखता है, तो वह केवल शब्द नहीं सीख रहा होता, बल्कि वह अपनी अभिव्यक्ति की शक्ति और अपनी पहचान का निर्माण कर रहा होता है।

भाषाई शिक्षा इन दोनों को कैसे प्रभावित करती है, इसे निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है।

जब एक छात्र किसी भाषा पर पकड़ बनाता है, तो उसका आत्मविश्वास कई गुना बढ़ जाता है। सही शब्दों का चुनाव छात्र को अपने विचार स्पष्ट रूप से रखने में मदद करता है। जब उसे पता होता है कि वह क्या कहना चाहता है और उसे कैसे कहना है, तो झिझक खत्म हो जाती है। भाषा का ज्ञान छात्र को मंच पर बोलने और दूसरों के सामने अपनी बात रखने का साहस देता है। नई भाषा सीखने से छात्र अलग-अलग समुदायों के लोगों से बात कर पाता है, जिससे उसका सामाजिक आत्मविश्वास बढ़ता है।

आत्मसम्मान का सीधा संबंध छात्र की मूल पहचान से होता है। यदि शिक्षा व्यवस्था छात्र की मातृभाषा को सम्मान देती है, तो छात्र को अपनी संस्कृति और पृष्ठभूमि पर गर्व महसूस होता है। इससे उसका आत्मसम्मान (Self-esteem) मजबूत होता है। अक्सर अंग्रेजी या किसी दूसरी 'बड़ी' भाषा के कारण छात्रों में हीन भावना (Inferiority Complex) आ जाती है। भाषाई शिक्षा में यदि सभी भाषाओं को समान महत्व मिले, तो छात्र खुद को दूसरों से कमतर नहीं समझता। भाषा

ISSN: 2349-6002

सीखने की प्रक्रिया में गलतियाँ होना स्वाभाविक है। यहाँ आत्मविश्वास की परीक्षा होती है। एक सुरक्षित शैक्षिक वातावरण में, जहाँ गलत बोलने पर मजाक न उड़ाया जाए, छात्र गलतियाँ करके भी आत्मविश्वास नहीं खोता। जब शिक्षक सुधार के लिए सकारात्मक फीडबैक देते हैं, तो छात्र का आत्मसम्मान सुरक्षित रहता है और वह और बेहतर करने के लिए प्रेरित होता है।

निष्कर्ष

पहचान का सम्मान ही वास्तविक शिक्षा है शिक्षा का अंतिम उद्देश्य व्यक्ति को स्वयं से परिचित कराना है। जब एक विद्यार्थी को अपनी मातृभाषा में बोलने और अपनी संस्कृति को कक्षा में प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है, तो उसे यह संदेश मिलता है कि "वह और उसका परिवेश मूल्यवान है"। यही बोध उसके आत्मसम्मान की नींव रखता है। विविधता बाधा नहीं, बल्कि एक 'संसाधन' है एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक कक्षा एक ऐसी प्रयोगशाला है जहाँ छात्र सहानुभूति (Empathy), सहनशीलता और वैश्विक दृष्टिकोण सीखते हैं। अलग-अलग भाषाओं और संस्कृतियों का मेल छात्रों की रचनात्मकता और सोचने की क्षमता (Critical Thinking) को विस्तार देता है।

लोकतांत्रिक और समतामूलक समाज का निर्माण जब शिक्षा भाषाई और सांस्कृतिक रूप से समावेशी होती है, तो यह हाशिए पर रहने वाले समुदायों को मुख्यधारा में लाती है। यह 'भाषाई साम्राज्यवाद' (किसी एक भाषा का प्रभुत्व) को खत्म कर सामाजिक न्याय और समानता के सपने को साकार करती है। वैश्विक नागरिकता (Global Citizenship) नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के संदर्भ में देखें तो, भाषाई पहचान को संजोना हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है, जबकि सांस्कृतिक विविधता का सम्मान हमें एक 'वैश्विक नागरिक' के रूप में तैयार करता है। यह हमें सिखाता है कि हम अपनी विशिष्टता बनाए रखते हुए भी पूरी दुनिया के साथ तालमेल बिठा सकते हैं।

संदर्भ (APA शैली)

[1] https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf

[2] kushwaha, a. k. (2025). *Regional,linguistic,religious,ethnic and tribal diversity in india : impact and relevance in the field in education.* Gazipur,utter pradesh.